कुमारगुप्त

गुप्तों की अधीनता समाप्त कर यह स्वयं स्वतन्त्र शासक बन गया था। इसका समकालीन मौखरी शासक ईशानवर्मा था जो स्वयं स्वतन्त्र हो चुका था। दोनों के बीच युद्ध हुआ जिसमें ईशानवर्मा पराजित हुआ। इससे कुमारगुप्त का प्रभाव गंगा नदी के किनारे प्रयाग तक फैल गया। इसने प्रयाग में प्रज्वलित अग्नि में कूद कर अपने शरीर को भस्म कर दिया था। यह आत्महत्या (sucide) द्वारा शरीर त्याग की क्रिया इस प्रथा के चलन को स्पष्ट करता है।

दामोदरगुप्त

जैसे नारायण ने दैत्यों का नाश किया—येन दामोदरेणैव दैत्या इव हता द्विषः—उसी प्रकार इसने अपने शत्रुओं का नाश किया। इसने ब्राह्मण युवतियों का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न कराया तथा सैकड़ों ग्रामों को दान दिया।

महासेनगुप्त

यह वीरों में सर्वाग्रणी बताया गया है। इसने कामरूप के राजा सुस्थित वर्मा को पराजित किया था।

माधवगुप्त

यह महासेन का पुत्र तथा हर्ष का प्रगाढ़ मित्र था। इसी से लगता है कि यह मालवा में हर्ष के साथ रहता था। अतः इसे मालवगुप्त की संज्ञा दी गई है। वह अनेक शत्रुओं के विजेता कहा गया है तथा सज्जनता की मूर्ति, धार्मिक, सरस्वती तथा लक्ष्मी का निवासस्थान और वीरों का आभूषण बताया गया है।

आदित्यसेन

माधवगुप्त का यह पुत्र वैष्णव धर्म का अनुयायी तथा अनेक धर्मों के प्रति सहिष्णु था। इसने जनता के हित के लिए लोक कल्याणकारी कार्य किया था, जैसे उसकी पत्नी कोण देवी प्रजाहितार्थ एक सरोवर का निर्माण कराई थी। यहाँ इसे 'परमयशस्वी' कहा गया है।

इस प्रकार इस अभिलेख से मागधगुप्तों का इतिहास आदित्यसेन तक प्राप्त होता है।

5. हर्ष का बाँसखेड़ा का ताम्रपत्र लेख—संवत् 22

(Banskhera Copper Plate Inscription of Harsh—Samvat 22)

स्थान : बांसखेड़ा, जिला—शाहजहाँपुर, उ० प्र०

भाषा : संस्कृत

लिपि : उत्तर ब्राह्मी

काल : अनिर्दिष्ट सं० 22 (= लगभग 628 ई०)

विषय : हर्षवर्धन के पूवजों तथा उसकी उपलब्धियों का वर्णन

मूल-पाठ

1. श्री स्वस्ति महानौहस्त्यश्वजयस्कंधावाराच्छ्रीवर्द्धमानकोट्या महाराजाश्रीनरवर्द्धनस्तस्य-पुत्रस्तत्पादानुध्यातश्श्रीवजिणीदेव्यामुत्पन्नः ⌣ परमादित्यभक्तो महाराज-श्रीराज्यवर्द्धन-स्यतस्य पुत्रस्तत्पादानु—

2. ध्यातश्श्रीमदप्सरोदेव्यामुत्पन्नः परमादित्यभक्तो महाराज-श्रीमदादित्यवर्द्धन-स्तस्यपुत्रस्तत्पा-दानुध्यातश्श्रीमहासेनगुप्तादेव्यामुत्पन्नश्चतुस्समुद्रातिक्रांतिकीर्तिः प्रतापानुरागोप —

3. नतान्यराजो वर्णाश्रमव्यवस्थापनप्रवृत्तचक्र एकचक्ररथ इव प्रजानामार्त्तिहरः परमादित्यभक्तः परमभट्टारकमहाराजाधिराजश्री प्र (भा) कर (व) र्द्ध (न) स्तस्य पुत्रस्तत्पादा —

4. नुध्यातस्सितयशः प्रतानविच्छुरितसकलभुवनमंडलः परिगृहीत-धनदवरुणेंद्र-प्रभृतिलोकपाल-तेजास्त्पथोपार्जितानेकद्रविणभूमिप्रदा (नसं) प्रीणितार्थिहृदयो —

5. तिशयितपूर्व्वराचरितो देव्याममलयशोमत्याम् श्रीयशोमत्यामुत्पन्न परमसौगतस्सुगत इव परहितैकरतः परमभट्टारकमहाराजाधिराजश्रीराज्यवर्द्धनः। राजानो युधि दु —

6. ष्टवाजिन इव श्रीदेवगुप्तादयः कृत्वा येन कशाप्रहारविमुखास्सर्व्वे समं संयताः। उत्खाय द्विषतो विजित्य वसुधांकृत्वा प्रजानां प्रियं प्राणानुज्झितवानरातिभवने सत्यानुरोधेन यः। तस्या —

7. (नुजस्त) त्पादानुध्यातः परममाहेश्वरो महेश्वर इव सर्वसत्वानुकम्पा परमभट्टारकमहाराजा-धिराजश्रीहर्षः अहिच्छत्रभुक्तावंगदीयवैषयिकपश्चिमपथक स (म्बद्ध) मर्कट सा —

8. गरे समुपगतान्महासामंतमहाराजदौस्साधसाध निकप्रमातारराजस्थानीयेकुमारामात्यापरिक विषयपतिभटचाटसेवकादान्प्रतिवासिजानपदांश्च समाज्ञापयति विदितम् —

9. स्तु यथायमुपरिलिखितग्रामस्त्वसीमापर्यन्तस्सोद्रङ्गस्सर्व्वराजकुलाभाव्य प्रत्यायसमेतस्सव्वपरि-हृतपरिहारो विषयादुद्धतपिंड पुत्र पोत्रनुगश्चद्राकक्षितिसमका —

10. (ली) नो भूमिछिद्रन्यायेन मया पितुः परमभट्टारकमहाराजाधिराजश्रीप्रभाकरवर्द्धनदेवस्य मातुर्भट्टारिकामहादेवीराज्ञीश्रीयशोमतीदेव्या ज्येष्ठभ्रातृपरमभट्टारक —

11. महाराजाधिराजश्रीराज्यवर्द्धनदेवपादानाञ्च पुण्ययशोभिवृद्धये भारद्वाराजसगोत्र-बह्वचच्छन्दोगसब्रह्मचारिभट्टबालचंद्रभद्रस्वामिभ्यां प्रतिग्रहधर्मणाग्रहारत्वेनप्रतिपा —

12. दितो विदित्वा भवद्भिस्समनुमन्तव्यः प्रतिवासिजानपदैरप्याज्ञाश्रवणविधेयैर्भूत्वा यथासमुचित-तुल्यमेयभागभोगकरहिरण्यादिप्रत्याया एतयोरेवोपनेयास्सेवोपस्थानञ्चक —

13. रणीयमित्यपि च। अस्मत्कुलक्रमदायुरमुदाहरद्भिरन्यैश्च दानामिदमभ्यनुमोदनीयम् लक्ष्म्यास्त-डित्सलिलबुदवुदचंचलाया दानं फलं परयशः परिपालनञ्च कर्मणा म —

14. नसा वाचा कर्त्तव्यं प्राणिभिर्हितं हर्षेणैतत्समाख्यतन्धर्म्मार्ज्जनमनुत्तमम्। दूतकोत्र महाप्रमातार-महासामन्तश्रीस्कंदगुप्तः महाक्षपटलाधिकरणाधिकृत महासामन्तम्

15. हाराज (भान) समादेशादुत्कीर्ण —

16. ईश्वरेणदेमिति सम्वत् 20 2 —

17. कार्त्ति वदि 1 (।)

18. स्वहस्तो मम महाराजाधिराजश्रीहर्षस्य (॥)

हिन्दी अर्थान्तर

श्रीस्वस्ति, नाव, हाथी और घोड़ों से युक्त वर्द्धमान कोटि के महान् सैनिक शिविर से (यह घोषित किया गया)—

1. एक महाराज नरवर्द्धन थे। उनकी रानी वज्रिणी देवी से उनके पदानुध्यात आदित्य के परमभक्त महाराज राज्यवर्द्धन पैदा हुए।

2. महाराज राज्यवर्द्धन की रानी अप्सरो देवी से महाराज आदित्यवर्द्धन उत्पन्न हुए जो पादानुध्यात और परम आदित्य भक्त थे। महाराज आदित्यवर्द्धन की रानी महासेनगुप्ता देवी से परम भट्टारक महाराजाधिराज प्रभाकरवर्द्धन उत्पन्न हुए। कुलपिता के पदानुध्यात और आदित्य के परम भक्त थे। इनका यश चारों समुद्रों को पार कर गया था। अन्य राजा उनके प्रताप एवं अनुराग से उन्हें मस्तक झुकाते थे।

3. इन्होंने बल प्रयोग द्वारा वर्णाश्रय-व्यवस्था को प्रतिष्ठित किया और प्रजा के दुःखों को सूर्य की भाँति नष्ट किया। उनकी निर्मल यशवाली रानी यशोमती देवी से उन्हीं की भाँति बुद्ध के परम-भक्त परोपकारी परमभट्टारक महाराजाधिराज राज्यवर्द्धन

4. पिता के पादानुध्यात और परमादित्य भक्त हुए। इनका उज्ज्वल यश और प्रताप संपूर्ण भुवन-मंडल में फैल गया। कुवेर, वरुण और इन्द्र आदि लोकपालों के तेज को ग्रहण कर सत्य और सन्मार्ग से प्राप्त द्रव्य, भूमि आदि प्रार्थियों को देकर उनके हृदय को संतुष्ट किया।

5. इनका चरित्र अपने पूर्वज राजाओं से दिव्य था।

6. इन्होंने देवगुप्त आदि राजाओं को युद्ध में एक साथ ही इस प्रकार दलित किया जैसे दुष्ट घोड़ों को चाबुक के प्रहार से रोका या घुमाया जाता है। उन्होंने अपने शत्रुओं का मूलोच्छेदन कर पृथ्वी को विजित किया और प्रजा के हित के कर्मों को करते हुए प्रतिज्ञा-पालन के लिए शत्रु के भवन में प्राण का उत्सर्ग कर दिया।

7. महाराज राज्यवर्द्धन के छोटे भाई उनके पादानुध्यात, परम शैव तथा शिवजी की तरह प्राणिमात्र पर अनुकम्पा करने वाले परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीहर्ष ने अहिछत्र भुक्ति के अन्तर्गत संगदीय विषय के पश्चिम पथ से सम्बद्ध मर्कट-सागर

8. (ग्राम) में एकत्रित महासामंत, महाराज, दौस्साधसाधनिक[1], प्रमातार, राजस्थानीय, कुमारामात्य, उपरिक, विषयपति, चाट, भट, सेवक और निवासियों के लिए निम्नलिखित आज्ञा प्रसारित किया—

9.10.11. सबको विदित हो कि मैंने अपने पिता परमभट्टारक महाराजाधिराज प्रभाकरवर्द्धन, माता परमभट्टारिका महारानी यशोमती देवी और पूज्य अग्रह महाराज राज्यवर्द्धन के पुण्य और यश की वृद्धि के लिए अपनी सीमा तक फैले ऊपर लिखित गाँव को—उस सम्पूर्ण आय सहित, जिस पर राजवंश का अधिकार था, सब प्रकार के भारों से मुक्त तथा अपने जिले से अलग कर चन्द्र, सूर्य और पृथ्वी की स्थिति तक पुत्र-पौत्र आदि के लिए भूमिछिद्र न्याय से—भरद्वाजगोत्रीय ऋग्वेदीय भट्ट बालचन्द तथा भरद्वाजगोत्रीय सामवेदीय भट्ट भद्रस्वामी को अग्रहार के रूप में दान दिया है।

---

1. यह राज्य के उच्च्व कर्मचारियों के पद थे। सम्भवतः आज के दुसाध का बोधक है।

12. ऐसा मानकर आप लोग इसे स्वीकार करें। इस गाँव के निवासियों को चाहिए कि हमारी आज्ञा को मान कर तुल्य, मेय, भाग, भोग, कर, सुवर्ण आदि इन दोनों ब्राह्मणों को दें और इनकी सेवा करें।

13. इसके अतिरिक्त हमारे महान् कुल से संबंध रखने वाले और दूसरों को भी इस दान का अनुमोदन करना चाहिए। जल के बुलवूले तथा बिजली की भाँति लक्ष्मी चंचला हैं। उनका कार्य दान देना और दूसरों के यश की रक्षा करना है।

14. मन से, वाचन से और कार्य से प्राणिमात्र का हित करना चाहिए। इसको हर्ष ने पुण्यार्जन करने की उत्तम रीति बतलाई है। महाप्रमातार, महासामंत श्रीस्कंदगुप्त यहाँ दूतक हैं और महाक्षपटल के कार्यालय में सामंत

15. महाराज (भान) की आज्ञा से

16. ईश्वर ने इसे उत्कीर्ण किया संवत् 22

17. कार्तिक बदी 1, हस्ताक्षर महाराजाधिराज श्रीहर्ष।

ऐतिहासिक महत्त्व

यह ताम्रपत्र महाराजाधिराज श्री हर्षवर्द्धन द्वारा लिखवाया गया है। यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के बांसखेड़ा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है। यह पत्र विवरण तथा रचना कौशल में ठीक उसी प्रकार का है जैसा कि मधुबन का ताम्रपत्र। सैनिक शिविर से प्रसारित एक अग्रहारा दान का आदेश इस ताम्रपत्र में अंकित है।

इसमें मौखरी राजाओं की वंशावली दी गई हैं। इस वंश में एक महाराजा नरवर्द्धन थे। उनके पुत्र (राज्यवर्धन) की स्त्री अप्सरा देवी से आदित्यवर्धन उत्पन्न हुआ था। इनकी रानी महासेनगुप्ता देवी से प्रभावकर वर्धन पैदा हुआ था। यह परम प्रतापी राजा था। इसकी कीर्ति शीघ्र ही फैल गई। इसकी रानी यशोमती देवी से राज्यवर्द्धन पैदा हुआ। इसने देवगुप्त आदि राजाओं को एक ही साथ युद्ध भूमि में पराजित किया था। शत्रु-गृह में इसकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई। इसके बाद इसका छोटा भाई हर्षवर्धन जो इस ताम्रपत्र का नायक है सिंहासनासीन हुआ।

इस ताम्रपत्र में इसने निम्नांकित अधिकारियों को संबोधित कर कहा है कि इनकी जानकारी के लिए यह प्रसारित किया जा रहा है। ये अधिकारी हैं—

1. दौस्साधसाधनिक—

आज के दुसाध-जो ग्राम रक्षा का कार्य करते हैं। चूँकि उस समय भी ये दुःसाध्य कार्य ही करते थे इसलिए इन्हें दौस्साधसाधनिक कहा जाता था।

2. प्रमातार

2. राजस्थानीय

4. कुमार मात्य—
   राजकुमार के मन्त्री

5. उपरिक

6. विषयपति—
   जिलाधीश

7. चाट—

ऐसे सैनिक जो नियमानुसार राज्य की ओर से नियुक्त नहीं थे पर स्वयं स्वतन्त्र रूप से राज्य में विचरण करते रहते थे।

8. भट्ट—

ये भी एक प्रकार के सैनिक थे। ये राज्य की ओर से नियमानुसार नियुक्त किए जाते थे। इनका कार्य गाँव की रक्षा करना था।

इसके बाद उन गाँवों का विवरण है जो अग्रहारा दाना के लिए इस प्रतापी राजा ने ब्राह्मणों को दिया था। पुनः वहाँ के निवासियों को संबोधित करके हर्ष ने निम्नांकित कर तथा सेवाओं को उन्हीं ब्राह्मणों को देने का आदेश दिया है जिन्हें अग्रहारा दान दिया गया था। ये कर हैं—

1. तुल्य	2. भोग	3. मेय
4. कर	5. भाग	6. सुवर्ण आदि।

इससे यह ज्ञात होता है कि उस समय राजा इन विभिन्न प्रकार के करों को लेता था।, पर इन सभी करों की वास्तविक परिभाषा ज्ञात नहीं है।

यहाँ वर्णित है कि हर्ष का साम्राज्य जनपदों में विभक्त था। इसे विषय कहते थे। इस विषय में महाप्रमातार महासामन्त श्री स्कन्दगुप्त दूतक थे और महाक्षपटल के कार्यालय में सामन्त ईश्वर ने महाराज की आज्ञा से इसे लिखा था।

बाद में संवत् 22 का उल्लेख है। पर यह पता नहीं कि यह संवत् किस गणना क्रम में है। इस सम्बन्ध में सामान्य धारणा है कि हर्ष ने चूँकि अपने नाम के साथ एक संवत् चलाया था अतः यह हर्ष संवत् की ही तिथि रही होगी। इसलिए इस अभिलेख की तिथि (606 + 22) = 628 ई० मानी जा सकती है।

अन्तिम पंक्ति में महाराजाधिराज श्री हर्ष लिखा है। यह हर्ष का हस्ताक्षर प्रतीत होता है।

इस प्रकार यह अभिलेख राजनीतिक महत्त्व के साथ ही प्रशासकीय महत्त्व का भी है। इसमें जहाँ राजा की वंशावली का उल्लेख है वहीं विभिन्न प्रकार के कर, अधिकारियों आदि का भी ज्ञान मिलता है।

6. हर्ष का मधुबन ताम्रपत्र लेख

(Madhuban Copper Plate Inscription of Harsha)

मूल पाठ

1. ॐ स्वस्ति महानौहस्त्यश्वजयस्कंधावारात् कपित्थकायाः महाराजश्रीनगरवर्द्धनस्तस्य-पुत्रस्तत्पादानुध्यातश्श्रीवज्रिणीदेव्यामुत्पन्नः परमादित्यभक्तो महाराजश्रीराज्यवर्द्धन—
2. स्यस्यपुत्रस्तत्पादानुध्यातश्श्रीमदप्सरोदेव्यामुत्पन्नः परमादित्यभक्तो महाराज श्रीमदादित्यबर्द्धन-रतस्पुत्रस्यततपादानुध्यातश्श्रीमहा—
3. सेनगुप्तादेव्यामुत्पन्नश्चतुस्समुद्रातिक्रांतकीर्तिः प्रतापानुरागोपनतान्यराजो वर्णाश्रमव्यवस्थापन-प्रवृत्तचक्र एकचक्ररथ इव प्रजानाभर्त्तिहरः—
4. परमादित्यभक्तः परमभट्टारकमहाराधिराज श्रीप्रभाकरवर्द्धनस्तस्य पुत्रस्तत्पादानुध्यातस्सि-तयशः प्रतानविच्छुरितसकलभुवनमण्डलः परिगृहीत—